नीलकुरिजी संकटग्रस्त प्रजाति घोषित

स्रोत: द हिंदू

नीलकुरिजी (स्ट्रोबिलांथेस कुंथियाना) प्रत्येक 12 वर्ष में एक बार खिलता है, इसे **IUCN रेड लिस्ट** में संवेदनशील (मानदंड A2c) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

- इस प्रजाति का इसके अद्वितीय पुष्पन चक्र और पारिस्थितिकी चुनौतियों के कारण पहले IUCN मानकों के अंतर्गत मूल्यांकन नहीं किया गया था।
- नीलकुरिजी तीन मीटर ऊँची एक **स्थानिक झाड़ी है, जो केवल दक्षिण-पश्चिम भारत** के पाँच पर्वतीय परिदृश्यों के उच्च ऊँचाई वाले **शोला ग्रासलैंड इकोसिस्टम (Shola Grassland Ecosystems)** में **1,340-2,600 मीटर की ऊँचाई** पर देखी जाती है।
    - नीलकुरिजी का वैज्ञानिक नाम **केरल के साइलेंट वैली नेशनल पार्क** (Silent Valley National Park) में स्थित कुंती नदी (Kunthi River) के नाम पर रखा गया है, जहाँ यह फूल बहुतायत में पाया जाता है।
    - वे सेमलपेरस (जीवनकाल में केवल एक बार प्रजनन करने वाले) होते हैं, तथा**जीवन चक्र के अंत में प्रत्येक 12 वर्ष में एक साथ खिलते और फलते** हैं।
    - अधिक मात्रा में खिलने के लिये प्रसिद्ध, ये फूल पहाड़ी घास के मैदानों को**बैंगनी-नीला रंग** प्रदान करते हैं, जिस कारण इन्हें **नीलकुरिजी (ब्लू स्ट्रोबिलांथेस) फूल के नाम** से जाना जाता है।
    - दक्षिण-पश्चिम भारत की उच्च ऊँचाई वाली पर्वत शृंखलाओं (High-Altitude Mountain Ranges) के 14 पारिस्थितिक क्षेत्रों में इस प्रजाति की 34 उप-प्रजतियाँ का आवास है, इनमें से 33 उप-प्रजतियाँ **पश्चिमी घाट** में और एक **पूर्वी घाट** (येरकॉड, शेवरॉय हिल्स) में पाई जाती हैं।
        - इस प्रजाति की अधिकांश उप-प्रजतियाँ तमिलनाडु के **नीलगिरी** में हैं, इसके बाद मुन्नार, पलानी-कोडाईकनाल और अन्नामलाई पर्वत में हैं।
- **प्रमुख संकट**: प्रमुख संकटों में चाय और सॉफ्टवुड बागानों से आवास का नुकसान, शहरीकरण, आक्रामक प्रजातियाँ और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। इसके **लगभग 40% आवास नष्ट** हो चुके हैं।

//

और पढ़ें: नीलकुरिजी फूलों की नई किस्म

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/neelakurinji-declared-as-a-threatened-species